सामाजिक व्यवस्था
SOCIAL SYSTEM.

जैसा की हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक क्रिया किसी न किसी नियम व्यवस्था से सुचारु रूप से चलती है। ठीक उसी प्रकार समाज के समस्त क्रिया-कलापों को नियन्त्रित करने के लिए बनाई गई व्यवस्था को सामाजिक-व्यवस्था कहा जाता है।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार - "समाज रीति-रिवाजों, कार्य-प्रणालियों, पारस्परिक सहयोग नियन्त्रण एवं स्वाधीनता आदि की व्यवस्था है"

पारसन्स के अनुसार - सामाजिक व्यवस्था सामाजिक क्रियाओं के भीतरी सम्बन्धों में बनती है। समाज की ये अन्तःक्रियाएँ सामाजिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण इकाई होती है।

"समाज में दो प्रकार की शक्तियाँ क्रियाशील रहती है"

(A) संगठनात्मक शक्तियाँ एवं

(B) विघटनात्मक शक्तियाँ

सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ
"Characteristics of social system"

(A) आदर्श लक्ष्यों का समावेश : जो समाज के द्वारा स्वीकृत कुछ आदर्श लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए की जाती है। इसके फलस्वरूप समाज में जिस आदर्श सन्तुलन का निर्माण होता है

(B) एकता का होना :- जिस प्रकार एक मशीन के समस्त पुर्जे मिलकर किसी मशीन को चलाते है ठीक उसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न घटक अपने उद्देश्यों तक पहुचने में सहयोग करते है।

सांस्कृतिक विपदा :- सामाजिक व्यवस्था में अनेक सांस्कृतिक नियन्त्रणों का समावेश होता है इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था अपने सदस्यों को अनेक सांस्कृतिक मानदण्डों मूल्यों एवं प्रतीकों के अनुसार अन्तर्क्रियाएँ करने को बाध्य करती है या प्रोत्साहित करती है। सामाजिक व्यवस्था का यह संरचनात्मक पक्ष होता है

'सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा की भूमिका'
'Role of Education in Social system'

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत की सामाजिक व्यवस्था के सभी पहलुओं में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है। बदलती हुई व्यवस्था के अनुरूप शिक्षा बनाने के लिए तेजी से प्रयास किए जा रहे है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति को उनकी सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जा रहा है

बेरोजगारी की समस्या :- बेरोजगार व्यक्ति निराशा से प्रभावित होकर सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार कर सकते है। बेरोजगार व्यक्ति सरलतापूर्वक गैर कानूनी कार्यों में लिप्त होकर समाज में अव्यवस्था फैला सकता है

जनसंख्या पर रोक :- विकास के संसाधन सीमित होते है यदि जनसंख्या अधिक होगी तो मांग में वृद्धि होगी तथा मांग के अनुरूप आपूर्ति न होने पर समाज में अव्यवस्था फैल सकती है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अपराधियों का सुधार :- समाज में अपराधी व्यक्ति किसी मशीन के बिगड़े हुए पुर्जे के समान होता है। उन्हें सुधार कर पुनः समाज में व्यवस्थित करने पर ही सामाजिक व्यवस्था सुचारु रूप से चल सकती है।

भ्रष्टाचार पर रोक - शिक्षा द्वारा बालकों की ऐसी व्यवस्था की जाए कि व्यक्ति अपने अधिकारों का दुरुपयोग न कर सकें तथा बच्चों में नैतिकता का विकास किया जाए।

समान कार्य करने का अवसर :- प्रत्येक व्यक्ति को अपना विकास करने के लिए पर्याप्त एवं समान अवसर देना चाहिए जिससे उनमें असन्तोष एवं असन्तोष जैसी अव्यवस्था जन्म न ले सके।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

AKHILESH YADAV
(B.Ed. M.Ed B.H.U)